साहित्य अकादेमी

अमृतलाल नागर जन्मशतवार्षिकी समारोह संपन्न

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, नाट्य प्रर्दान, चित्र एवं पुस्तक प्रर्दानी

दिनांक 20–21 अगस्त 2016, लखनऊ

संस्कृति मंत्रालय, भारत–सरकार एवं साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में हिंदी संस्थान, लखनऊ के निराला सभागार में आयोजित अमृतलाल नागर जन्मशतवार्षिकी समारोह के पहले दिन 20 अगस्त 2016 को बीज वक्तव्य देते हुए प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने कहा कि नागर जी अकेले बहुविध साहित्यकार थे। उनका व्यक्तित्व एवं लेखन दोनों ही विपुलताओं से भरे थे। प्रो. दीक्षित ने अनेक अवसरों पर नागर जी के साथ गुजारे वक़्त के अनेक संस्मरण भी सुनाए। नागर जी की सुपुत्री अचला नागर ने उनके व्यक्तित्व तथा लेखन के विभिन्न पक्षों को लेकर चर्चा की। अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि लेखक की उम्र बहुत लंबी होती है। वह साहित्य का दर्पण होने के साथ ही उसका निर्माता भी होता है। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त गुजराती साहित्यकार रघुवीर चौधरी भी मौजूद थे। उन्होंने कहा कि प्रयोगधर्मिता अमृतलाल नागर की पहचान थी। उन्होंने आम जन–जीवन को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने में कठिन श्रम किया। समारोह के प्रारंभ में नागर जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केंद्रित चित्र प्रदर्शनी एवं पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं अन्य साहित्यकारों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। चित्र प्रदर्शनी म नागर जी की पूरी रचनात्मक जीवन–यात्रा को 21 पैनल में प्रदर्शित किया गया। नागर जी की लिखी और उन पर लिखी गई पुस्तकों की प्रदर्शनी ने एक ही जगह पर नागर जी की संपूर्ण रचनात्मक उपस्थिति को महसूस करवाया। यह प्रदर्शनी साहित्य प्रेमियों द्वारा खूब सराही गई।

इस विशेष अवसर पर अमृतलाल नागर पर साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित हिंदी विनिबंध (मोनोग्राफ) का गुजराती, तमिळ और मलयाळम भाषा में अनूदित विनिबंध का लोकार्पण हुआ। साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त नागर जी के उपन्यास 'अमृत और विष' का मराठी अनुवाद का लोकार्पण भी किया गया। कार्यक्रम के संचालक कुमार अनुपम ने बताया कि शीघ्र ही शेष भारतीय भाषाओं में हो रहे अनुवाद भी पुस्तकाकार में प्रकाशित होंगे।

'अमृतलाल नागर की औपन्यासिक कृतियाँ' विषय पर केंद्रित प्रथम सत्र में प्रख्यात कथाकार ममता कालिया ने कहा कि नागर जी ने हिंदी गद्य को अभिव्यक्ति के सर्वाधिक सशक्त माध्यम के रूप में स्थापित किया। उनका मानवतावाद बेहद उदार था। 'नाच्यौ

बहुत गोपाल' में उन्होंने जाति–वर्ण व्यवस्था को खुली चुनौती दी। चर्चित साहित्यकार माधव हाडा ने रामविलास शर्मा के कथन को उद्धृत करते हुए कहा कि उपन्यास उनकी प्रतिभा का उचित क्षेत्र था, और नागर जी के अंदर कथाकार हमेशा मौजूद रहा। वरिष्ठ आलोचक रोहिणी अग्रवाल ने कहा कि नागर जी ने समय से आगे की बात कही है। 'बूँद और समुद्र' में साक्षात व जीवंत जीवन है जो रचनाकार के विराट व्यक्तित्व को दर्शाता है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात कथाकार गोविद मिश्र ने कहा कि नागर जी के व्यक्तित्व में खुलापन था और इसीलिए उनके लेखन में रेंज था। उनकी रचनाओं में कथात्मकता थी। उत्तरोत्तर हिंदी उपन्यासों में कथात्मकता पर जोर कम हुआ जबकि आज के उपन्यासों में जीवन की व्याख्या पर अधिक जोर दिया जाता है।

'अमृतलाल नागर की कहानियाँ एवं बाल साहित्य' विषयक द्वितीय सत्र में वरिष्ठ कथाकार शिवमूर्ति ने कहा कि कहानियाँ उनके साहित्य में हाशिए पर रहीं। इस संबंध में उन्होंने नागर जी के इस कथन को उद्धृत किया कि आलोचकों ने मेरी कहानियों का विशेष नोटिस नहीं लिया। प्रख्यात बाल साहित्यकार प्रकाश मनु ने कहा कि नागर जी उस्ताद किस्सागो थे जिनको पाठक दीवानगी की हद तक प्यार करते थे। बड़ी बात यह है कि उन्होंने बच्चों के लिए भी लिखा है। कवि और 'लमही' पत्रिका के संपादक विजय राय ने कहा कि बनारस का तत्त्व नागरजी की कहानियों में मौजूद है। वह प्रेमचंद की परम्परा के उत्तराधिकारी माने जाते हैं। सहज अंदाज के इस कुशल गद्य शिल्पी की रचनाओं में प्रेमचंद के बाद सबसे ज़्यादा मुस्लिम किरदार गढ़े गए हैं। नूर जहीर ने कहा कि नागर जी ने महिलाओं की विभिन्न समस्याओं को बेहद खूबसूरती के साथ उभारा है, जिसकी कोई मिसाल नहीं है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए रमेशचंद्र शाह ने कहा कि भारतीय समाज में परिवर्तन न हो पाना नागर जी की प्रमुख चिंता थी। उपन्यासो से उनको स्थायी कीर्ति प्राप्त हुई।

तृतीय सत्र का विषय था 'अमृतलाल नागर का कथेतर गद्य एवं हास्य व्यंग्य', जिसमें इतिहासकार, उपन्यासकार योगेश प्रवीन ने अपने विशिष्ट अंदाज में नागर जी और तत्कालीन लखनऊ की तमाम खूबियों के बयान से श्रोताओं को अचम्भित और प्रफुल्लित किए रखा। नागर जी की पौत्री और लोकभाषाविद् दीक्षा नागर ने इस बात पर चिंता जताई कि आज के दौर में साहित्य से जुड़ने की कोई कोशिश नहीं हो रही है। उन्होंने कहा कि आत्मकथ्य आत्मावलोकन एवं आत्मीय प्रसंगों के माध्यम से नागर जी के साहित्य को जानना अधिक उपयोगी सिद्ध होगा। आलोचक योगेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि नागर जी का अध्ययन क्षेत्र व्यापक है। उनका साहित्य 'डिस्कवरो ऑफ अवध' है।

'नाटक, रंगमंच, फिल्म एवं रेडियों के क्षेत्र में अमृतलाल नागर' विषयक चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ रंगकर्मी प्रतिभा अग्रवाल ने लखनऊ के संदर्भ में उन्हें 'नाटकों का भरत मुनि' बताते हुए कहा कि वह नाटकों को लोकप्रिय बनाने के लिए

बहुत चिंतित रहते थे। वरिष्ठ रंगकर्मी उर्मिल कुमार थपलियाल ने कहा कि नागर जी गाँव–मुहल्ले के थियेटर को पेशेवर थियेटर मानते थे। इस बारे में उनका कहना था 'पश्चिमो थियेटर से सीखो मगर अपने थियेटर को मत भूलो'। सिने निर्देशक व रंगकर्मी अतुल तिवारी ने सिनेमा के विभिन्न पक्षों की बात करते हुए उसमें नागरजी के विशिष्ट योगदान पर चर्चा की, उन्होंने कहा कि नागर जी ने फिल्मों में हिंदी डबिंग के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाई।

इसी दिन शाम को नागर जी की रचना 'युगावतार' का नाट्य मंचन भी ललित सिंह पोखरिया के निर्देशन में आयोजित हुआ। यह नाटक हिंदी लेखक भारतेंदु हरिश्चंद्र के जीवन पर आधारित है। नाटक के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना, बंधुत्व, परदुखकातरता, स्वाधीनता के लिए संघर्ष और समृद्ध भारतीय संस्कृति की प्रेरणादायी प्रस्तुति की गई। इस नाटक का मंचन यशपाल सभागार में संपन्न हुआ।

समारोह के दूसरे दिन 21 अगस्त 2016 को 'स्मृति में अमृतलाल नागर' विषयक चतुर्थ सत्र के अध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार गिरिराज किशोर ने कहा कि नागर जी ने अपने समय की बहुत बड़ी पीढ़ी का नेतृत्व किया। उन्होंने कहा कि नागर जी रचनाएँ उनके विराट व्यक्तित्व का हिस्सा हैं। नागर जी की खोजी प्रवृत्ति रचना को पाठकों के और करीब लाती रही है। सत्र में रामविलास शर्मा के पुत्र व चर्चित साहित्यकार विजय मोहन शर्मा ने कहा कि नागर जी ने बहुत सी रचनाएँ उपनाम से लिखी ह, जिसमें तस्लीम लखनवी एक नाम है। वह साइकिल पर सामान रखकर शहर आ गए थे। उन्होंने अपना काफी समय निराला जी के साथ और मेरे पिता के साथ गुजारा था। पुरातत्त्वविद राकेश तिवारी ने नागर जी के साथ अपने संस्मरण सुनाते हुए बताया कि नागर जी हमेशा लिखने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कहा करते थे कि जिदगी लैला है, इसे मजनू की तरह प्यार करो। उन्होंने कहा कि नागर जी युवाओं को बहुत प्रेरित करते थे। रंगकर्मी व नागर जी के परिवार के संदीपन नागर ने अमृतलाल जी की यादें ताजा करते हुए कहा कि वे किसी भाषा के विरोधी नहीं थे बल्कि उन्हें अपनी मातृभाषा से बहुत प्यार था। उन्होंने हमेशा अपने परिवार को अपने बल पर आगे बढ़ने की सीख दी।

समारोह के छठे सत्र में 'भारतीय भाषाओं में अमृतलाल नागर की उपस्थिति' विषय पर परिचर्चा हुई, जिसमें गुजराती, मलयाळम, तेलुगु व उर्दू के रचनाकारों ने अपने विचार रखे। सत्र की अध्यक्षता श्रीनिवास उद्गाता ने की। सत्र में साहित्यकार व अनुवादक आलोक गुप्त ने कहा कि नागर जी ने एक लेखक की जिदगी जी है। नागर साहब ने कहा था कि 'लेखक की कमाई खाई है, जिसके लिए वह अपनी मेहनत व राम के सिवा किसी के एहसानमंद नहीं ह। सुधांशु चतुर्वेदी ने मलयाळम, एस. शेषारत्नम ने तेलुगु, शकील सिद्दकी ने उर्दू भाषा में नागर जी की उपस्थिति को रेखांकित किया। समापन सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि नरेश सक्सेना ने की और समापन वक्तव्य अचला नागर ने

दिया। नरेश सक्सेना ने कहा कि अमृतलाल नागर आम आदमी को अपना मालिक मानते थे। उनके जैसा कला का धनी आज के युग में होना बहुत ही मुश्किल है। वह साहित्य की दुनिया के वैज्ञानिक थे। 'निकाह' और 'बागवान' जैसी चर्चित फिल्मों की लेखिका व अमृतलाल नागर की सुपुत्री अचला नागर ने संस्कृति मंत्रालय और साहित्य अकादेमी को इतने विशाल और सुंदर कार्यक्रम आयोजित करने के लिए हार्दिक बधाई और धन्यवाद दिया। हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक सूर्यप्रसाद दीक्षित ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। दोनो दिवसों के कार्यक्रमों का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) कुमार अनुपम ने किया।

शाम को नागर जी के कहानियों पर आधारित 'नागर कथा' नामक नाटक का चित्रा मोहन के निर्देशन में मंचन संपन्न हुआ। इस नाटक में नागर जी की दो कहानियों –'शकीला की माँ' और 'कादिर मियाँ की भौजी' का कोलाज प्रस्तत किया गया। नाटक में लखनऊ की तत्कालीन नवाबी परंपरा के अंतिम दिनों और स्त्री की विकट जीवनदशा की मार्मिक झलक दिखी, जिसने दर्शकों को भावुक कर दिया।

दोनों ही दिन लखनऊ के अनेक गणमान्य नागरिक, लेखक, संस्कृतिकर्मी, छात्र और मीडियाकर्मी भारी संख्या में उपस्थित रहे।